Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara
Date; 19/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,
Topic -

Development of Personality

फ्रायड ने व्यक्तित्व विकास की व्याख्या दो दष्टिकोण से की हैं। प्रथम दृष्टिकोण के अनुसार वयस्क व्यक्तित्व बाल्यावस्था के भिन्न-भिन्न तरह की अनुभूतियों द्वारा नियंत्रित होता है एवं द्वितीय दृष्टिकोण के अनुसार जन्म के समय लैंगिग ऊर्जा बच्चों में उपस्थित होती है जो विभिन्न मनोलैगिंक अवस्थाओं (Stages of Psychosexual) से होकर विकसित होती है। फ्रायड के द्वितीय दृष्टिकोण को मनोलैंगिक विकास का सिद्धान्त की संज्ञा दी है। इन्होंने व्यक्तित्व विकास के पाँच चरण या अवस्थायें बतायी है-

(1) मुखावस्था (Oral Stage)- मनोलैंगिक विकास की यह प्रथम अवस्था है। यह व्यक्ति के जन्म से लेकर लगभग एक वर्ष की आयु तक होती है। इस अवस्था में प्रमुख कामुकता क्षेत्र मुँह होता है। बच्चों में खाने एवं चूसने की क्रिया से सर्वाधिक संतुष्टि मिलती है।

(2) गुदावस्था (Anal Stage)-व्यक्तित्व विकास की यह द्वितीय अवस्था है। यह 2 से 3 वर्ष की आयु के मध्य होती है। इसमें बच्चा अधिकतम संतुष्टि या खुशी गुदा क्षेत्र के उत्तेजन से प्राप्त करता है।

(3) लिंग प्रधानावस्था (Phallic Stage)- यह व्यक्तित्व विकास की तृतीय अवस्था है। यह 4 से 5 वर्ष की आयु के बीच की अवस्था है। इस अवस्था में बच्चे अधिक सन्तुष्टि एवं सुख जनेन्द्रियों के आत्म उत्तेजन से प्राप्त करते हैं। इस अवस्था में लड़कों में मातृमनोग्रन्थि तथा लड़कियों में पितृमनोग्रन्थि विकसित होता है।

(4) अप्रगटावस्था / अव्यक्तावस्था (Latency Stage)- यह अवस्था 6 से 7 वर्ष की आयु से आरंभ होकर 12 वर्ष की आयु तक बनी रहती है। इस अवस्था को सच्चे अर्थ में मनालैंगिक विकास की एक अवस्था नहीं कह सकते है क्योंकि इस अवधि में कोई नया कामुकता क्षेत्र विकसित होता नहीं है। इस अवस्था में लैंगिक आवेग में कमी आ जाती है क्योंकि बच्चे इसमें नए कौशलों एवं अन्य क्रियाओं में अधिक रुचि लेना प्रारम्भ कर देते हैं।

(5) जननेन्द्रियावस्था (Latency Stage)- मनोलैंगिक विकास के इस चरण में किशोरावस्था एवं प्रौढ़ावस्था या वयस्कावस्था को शामिल किया गया है। यह 13 वर्ष की आयु से प्रारंभ होती है एवं निरन्तर तथा आजीवन चलती ही रहती है। इस अवस्था में व्यक्ति को अधिकतम संतुष्टि या आनन्द विषमलिंगी सम्बन्ध से होता है।
इस प्रकार स्पष्ट रूप से कह सकते है कि फ्रायड ने असामान्य व्यवहार की व्याख्या वस्तुतः जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि से सम्बन्धित उत्पन्न संघर्षों / द्वन्द्वों के आलोक में करने का प्रयास किया है। आगे चल कर फ्रायड के कुछ समर्थकों ने इसका विरोध करते हुए कहा कि प्रतिबल तथा असामान्यता के विकास में व्यक्तिगत समस्याओं तथा हीनता के भाव या अन्तर्वैयक्तिक द्वन्द्व का हाथ होता है। इन समर्थकों को नव-फ्रायडवादी विचारकों की संज्ञा दी गयी। अतः नव फ्रायडवादी मॉडल को मनोगतिकी उपागम का दूसरा भाग मानते है।